

हिन्दी रंगमंच में इतिहास और राजनीति

हबीब तनवीर के नाटक "चरणदास चोर" में
रंगभाषा का महत्व

रंगभाषा की महत्ता इसी में है कि वह किसी एक जगह टिकी नहीं रहती, उसके प्रमुख कारक मूले ही दर बार वही रहते हैं, पर वह बराबर नये अर्थ, रूप और आकार ग्रहण करती रहती है। इसी में दिया है उसका "जादू"।

प्रायः सभी समाजों में, और लगभग हर युग में उसे कुछ ऐसे निर्देशक, अभिनेता/अभिनेत्री, और रंगकर्मी मिलते हैं, जो अपने सृजनशील स्पर्शों से उसे एक नव्य-बोध से भर देते हैं। वह अगर अलसा गयी हो तो सचेत हो उठती है, 'पुराने' के बोझ से ढब गयी हो तो नयी हो उठती है, और सजीव होने की लालसा तो उसे हमेशा रहती है।

उसके इस सजीव पक्ष के कारण ही तो यह माना जाता है कि कोई भी मंच-प्रस्तुति कभी भी अपने को "दीदराती" नहीं है - दुहरा सकती नहीं है। वह चाहे अच्छे के लिये बदले, चाहे बुरे के लिये, कुछ-न-कुछ तो उसमें हर प्रस्तुति के साथ बदल ही जाता है।

लेकिन जब स्वयं रंगभाषा, सृजनशील स्तरों पर "बदलती" है तो बात ही कुछ और होती है : तब वह मानों तिरिस्कृत या 'खादिज' किसी चीज को नहीं करती, बस अपने आलोचनात्मक आग्रहों के कारण अपने लिये कुछ ज़रूरी तत्वों को चुनती और खोजती है, और अपने को जीवंत बनाती है।

रंगभाषा समाज का पुनर्सृजन और पुनर्गठन करने के लिये अपने आप को सजीव करती है, एक शक्तिशाली दृष्टिकोण के रूप में वह समाज में राष्ट्रियता और लोक-उत्थान की भावना को जागृत करती है और इसी वजह से वह आत्म आलोचना को स्वीकारती है और चयन और खोज के माध्यम से सामाजिक और राजनैतिक आन्दोलनों को सुदृढ़ बनाती है। वास्तव में रंगभाषा में सृजन, गठन और व्यवस्था की क्रिया जब रंगमंच पर प्रस्तुत की जाती है तब हम यह अनुभव करते हैं कि चयन और खोज ही उसके मौलिक आधार हैं।

“चरणदास चौर” एक ऐसा नाटक है जिस में हम रंगभाषा में उपस्थित विभिन्न कलाओं का खेल और उन में होती अंतर्क्रियाओं को अनुभव करते हैं।

दबीब तनवीर ने विजय दान देता के इस नाटक में संगीतमय संवाद, नाच, नृत्य-लेख और दृश्य-काव्य का बेदरतीन इस्तेमाल किया है और इसीलिये यह हमारे अध्ययन के लिये एक महत्वपूर्ण रचना है।

उन्होंने अपनी इस उल्लेखनीय रचना में आधुनिक रंगमंच के उपकरणों का उपयोग भी किया है (दबीब साहब अधिकतर ग्रामीण रंगकर्मियों के साथ काम करते हैं परन्तु कभी-कभी वह शहरी रंगकर्मियों को भी अपनी रचनाओं में शामिल करते हैं)। आधुनिक मंच उपकरणों के होते हुये भी रंगभाषा के अनूठे सौंदर्य ने उनकी प्रस्तुतियों को एक सहज सादगी, काव्यमयता और गहराई दी है।

दबीब तनवीर ने अपनी रचनाओं के माध्यम से ग्राम्य जीवन को दुनिया के सामने लाने की कोशिश करी है। वह भारतीय रंगमंच के ऐसे प्रणेता हैं जिन्होंने लोकप्रिय रंगमंच के जरिये रंगभाषा के अर्थ को व्यापकता दी है।

नये स्वाधीन भारत के संदर्भ में उनके नाटक एक ऐसी ध्वनी की गूँज हैं जो अत्यंत संवेदनशील भी है और विस्फोटक भी। समाज सुधार की इस ध्वनी को देश के कोने-कोने तक पहुँचाना इस गूँज का उद्देश्य है। और इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिये एबीए तनवीर ने रंग, सुर, ताल, नाच, नृत्य का एक अद्भुत मिश्रण, पारंपरिक अथवा ग्रामीण रंगमंच के माध्यम से हमारे सामने प्रस्तुत किया है और रंगमंच को एक नयी/नवीन परिभाषा दी है।

यदि हम भारत की वास्तविक सामाजिक स्थिति का आंकलन करें तो हम संक्षेप में कह सकते हैं कि बहुत से जन आन्दोलन ग्रामीण उत्थान के लिये कार्यरत हैं। इस परिपेक्ष में अगर एबीए तनवीर के नाटक का अध्ययन किया जाये तो हम इस निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि उनकी रचना ने ग्रामीण क्षेत्रों की निर्बल होती हुई ध्वनी को, एक नवीन रंगभाषा के माध्यम से, एक गूँज में परिवर्तित कर दिया और उसको भारतवर्ष के विभिन्न प्रांतों में पहुँचाया।

उनके नाटकों की भाषा हम को एक उज्ज्वल मविष्य के बारे में सोचने और समाज की उन "जड़ों" को उखाड़ फेंकने के लिये प्रेरित करती है जिनकी वजह से पीड़ित और शोषित वर्गों को पिछड़ा रहना पड़ता है।

शहरों में प्रचलित "नुक्कड़-नाटक" के प्रति उनका असीम स्नेह रहा है, परिणाम स्वरूप उन्होंने "जन नाट्य मंच" के साथ कई नये आयाम स्थापित किये उद्धारण के तौर पर उन्होंने अपनी रचनाओं में «ग्राम्य» और «नागरी» शैलियों में एक अनूठा रिश्ता कायम किया।

हमारे अध्ययन के लिये महत्वपूर्ण है कि हम उनके द्वारा निम्न प्रकार की शैलियों के बीच में स्थापित रिक्तों से परिचित हों :

शास्त्रीय \rightleftharpoons लोकप्रिय

नागरी \rightleftharpoons ग्राम्य

पारंपरिक \rightleftharpoons आधुनिक

स्थानीय \rightleftharpoons सार्वजनिक

एबीए साहब की विचारधारा के अनुसार, रंगमंच भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में प्रवास करता है। गाँव की वृद्ध प्रगति का सबसे पहला / प्रथम अध्याय मानते हैं। उनके लिये असली रंगमंच जमीनी रंगमंच है जो कि सांस्कृतिक अथवा जन आन्दोलनों का मौलिक आधार है और जिस के द्वारा हम सामाजिक त्रुटियों को गिटा कर निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर होते हैं।